मधुबन के कुमारों का आह्वान

- ब्र.कु.सुमन,जानकीपुरम,लखनऊ

- गतांक से आगे...

हमें ऐसा लगता है कि तीन खास कार्यों के उद्देश्य से जानी-जाननहार ने तुम्हें यहाँ के लिये चयनित किया होगा। एक तो यह साकार कर्मभूमि है, पर साकार की अनुभूति अव्यक्त में आने वाले कैसे करेंगे? इतना तो उनमें सामर्थ्य नहीं कि वह अव्यक्त की फीलिंग को साकार में कनवर्ट कर लें, उसके लिए बाबा ने साकार प्रतिनिधि बना कर रखा होगा! ज्ञान किसी को समझ में आया हो या न आया हो, पर भावना व स्नेह अन्त तक भी व्यक्ति के मानस पटल पर स्लाइड की तरह घूमता रहता है, सिर्फ वह घूमता ही नहीं है पर अन्तस की गहराई में ऐसे समाहित हो जाता है कि उसे किसी भी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है। मेरे भाई ! मधुबन में जो भी कैसे भी करके आते हैं उन्हें

साकार की अनुभूति कराना, इस परम उद्देश्य के लिए ही शायद विधाता ने चुना होगा। साकार भूमि में साकार की अनुभूति कराना ही है। तुम्हारा चरित्र गुणों की गरीमा बन उनके मन में मूल्यों की जीवन्त खुशबू भर दे।

तुम्हारी रुहानियत भरी नज़र अलौकिक प्रेम का विमल सिन्धु बन प्यार के सूखे कोसुख का बरसता सावन बन जाये। तुम्हारा जीवन ऊर्जा का पर्याय बन दिलशिकस्त हो चुके लोगों में उत्साह का अनन्त संचार कर दे। खुशी का अविरल प्रवाह बन मुरझाये मन में उमंगों की बहार-ए-बसंत ला दे। तुम्हारा तेज पावनता का प्रखर सूर्य बन उनके जीवन पथ पर बिखरे अज्ञान के हर तिमिर को उजाले से भर दे। तुम्हारा सानिध्य वैराग्य का रस घोल उनके ज़हन में साधना का दीप जला दे, तुम्हारी चलन साकार के अनुभवों का श्रेष्ठतम् दर्पण बन उनको प्रभुवर के साथ प्रियवर आदि पिता की छायाप्रति का एहसास कराये। उन्हें आकार का ख्याल महसूसता के नेत्र से साकार होते दिखाई दे। साकार ने अपनी गद्दी पर बड़ी दादी को योग्यतम वारीस देखकर बैठाया होगा? जिसका उदाहरण कई लोगों के मुख से सुना, एक बार एक दादी कह रही थी कि कुमारिका ने कमाल का काम किया है जो किसी को साकार की कमी महसूस नहीं होने दी, सबको एक संगठन में प्रेम से बांध कर रखा। अब यह संकल्प साकार करने की तुम्हारी चुनौती है। इसी प्रकार तुम्हें भी भगवान ने क्यों यहाँ रखा? यह ऐसी भूमि है जिसको प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ रुद्धता भी प्राप्त है, जिसका एक कारण है यहाँ की आबादी का बहुत ही कम होना, जिससे भ्रष्टाचार की आग इतनी नहीं सुलग रही, दूसरा कारण, भगवान के आने के पहले ऋषियों-मुनियों, तपस्वियों ने अपने तप से इस धरनी को शुद्ध किया है। राजा गोपीचन्द, राजा भर्तहरि के वैराग्य ने बल भरा, अनेक यादगार मंदिरों के वायब्रेशन्स ने इस धरा को इतना दूषित नहीं होने दिया। मेरे भाई! तुम वहाँ रह रहे हो, सोचो किस लिए? अपने उस महान कार्य को याद करो, जगाओ अपनी सुषुप्त शक्तियों को, याद करो अपने आरंभिक अतीत को, तुम कौन हो? तुम इस विश्व के आधार हो। सबको दिशा देने वाले तुम हो। सोचो तो सही कि आधाकल्प से जिन्होंने मानवता को दिशा दी, संसार के दर्द को दूर करने का हर संभव प्रयास किया, जनमानस को विकारों की प्रचण्ड अग्नि में जलने से बचाने के लिए धर्मनीति को जीवन का आधार बनाया। भ्रष्टाचार की आंधी में तहस-नहस हो रहे समाज को नैतिकता का पाठ पढ़ा उसे बर्बादी की खाई में गिरने से बचाया, खून से हाथ रंगने वालों को प्रेम का पाठ पढ़ा विश्व बन्धुत्व की भावना जागृत की, आज वे धर्मपितायें कहाँ हैं? क्या कर रहे हैं? बाबा कहते हैं कि एक बार वे भी शक्ति भरने आयेंगे, तो कहाँ आयेंगे, कब आयेंगे और कैसे आयेंगे? साकार बाबा तो अभी है नहीं, हर धर्म में भी ब्रह्मा बाप को किसी न किसी रूप में मान्यता तो प्राप्त है ही, तो उनसे कहाँ और कब मिलेंगे? एक बार दादी जानकी से शायद विदेशी भाई-बहनों ने क्वेश्चन पूछा था कि क्या धर्म स्थापक आ चुके हैं? तो दादी ने कहा था कि अभी ऐसा लगता नहीं कि वे लोग आ चुके हैं। तो सोचो मेरे भाई! कि उन्हें कौन लायेगा?

मेरे भाई, वे सब महान धर्मात्मायें यहाँ मधुबन में ही तो आयेंगे, क्योंकि यहाँ की मिट्टी में प्रजापित ने परमात्म प्रेम का बीज बोया है, यहाँ की हवाओं में पावनता की सुगंध बह रही है, यहाँ की तरंगों में वैराग्य का रंग घुला हुआ है, यहाँ के कण-कण से आदि पिता के तप का तेज प्रस्फुटित हो रहा है। उनको ये प्राप्तियाँ तुम्हें करानी होंगी, जिनकी उन्हें सदियों से तलाश है, उन शक्तियों का स्रोत उन्हें दिखाना है जिससे वे अपार शक्तियों को धर्म स्थापन के लिए समाहित कर सकें। उस आदि पिता से रूबरू भले न हो पायें, पर उसकी पालना की विरासत का एहसास तो कराना ही होगा। उस घर में बसेरा भले न कर पायें पर आश्रय की अनुभूति तो करानी ही होगी। उन्हें लाने के लिए चाहिए एक ऐसी महान शक्ति, एक ऐसी पावन ऊर्जा, धधकता हुआ जज़्बा, एक विशुद्ध भावना, जो सिर्फ देने का भाव जगाती हो। मेरे भाई! उन्हें तुम्हें लाना है, तुम उन्हें ला सकते हो। इस महान कार्य के लिए बाबा ने तुम्हें यहाँ रखा है। आह्वान करो उनका, बुलाओ उन्हें, पुकारो उनको, जो आने की राह बिना पते के तलाश रहे हैं, एक लम्बे समय से प्रतीक्षा में हैं। उनके इंतज़ार को खत्म करने का इंतज़ाम कुछ तो करो। मेरे भाई! अब देर मत करो, अब समय नहीं है। मधुबन को पहले स्वर्गाश्रम कहा जाता था। यह एक ऐसा आश्रम है जो स्वर्गीय आनंद अभी भी कराता है और स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ भी कराता है। मेरे भाई! सतयुगी स्वर्ग में जाना तो सभी के लिए संभव नहीं, पर यहाँ के स्वर्ग का अनुभव तो कराया जा सकता है ना। जो मानवता एवं सज्जनता से बहुत दूर हैं उनके जीवन को एक बार देखो तो सही! सदियों से नर्क के दलदल में आकंठ तक डूबकर मोह में फँसे मानव में प्यार की एक बूंद को तलाश रहे हैं, क्षणिक आवेश में मन की शान्ति के लिए बड़े-बड़े अपराध कर रहे हैं। न खाने वाली चीज़ें जो आदि मानव का भोजन मानते रहे, वही समझदार बन आधुनिक टेबल पर बैठकर नरभक्षी की तरह खा रहे हैं। आँखों पर विकारों की पट्टी बांधकर ऐसे-ऐसे पाप कर रहे हैं जिनको सुनकर कलेजा मुँह को आ जाये। आधुनिकता के लिबास में भारतीय संस्कृति को तहस-नहस कर फैशन की आंधी में ऐसे उड़ा रहे हैं कि मर्यादा चित्कार रही है। व्यसनों का भूत सिर पर ऐसे सवार है कि सर्वश्रेष्ठ प्राणी, जिनको अपनी ही खबर नहीं, अपना ही होश नहीं, क्या करने चले थे और क्या करने लगे हैं? कहाँ जाना था, कहाँ जा रहे हैं? कुछ पता नहीं। अनमोल जीवन को दे रहे हैं बीमारियों का घुन, लगा रहे हैं नैतिकता में आग, बढ़ा रहे हैं नित नये दंगे फसाद, घोल रहे हैं समाज में पतन का ज़हर, कर रहे हैं इंसानियत एवं मानवता की विनाश लीला। मेरे भाइयों! इस महामारी को कौन रोकेगा? क्या तुम्हें इनकी मुर्खता व बेबसी पर रहम नहीं आता? आखिर आप क्या सोच रहे हो? पाप की बहती नदी को रोकना तो मुश्किल हो सकता है पर इसे श्रेष्ठ कर्म से परिशोधित तो अवश्य किया जा सकता है, और यह कार्य भी आपको तब करना है जबकि कोई भी इस कार्य को करना नहीं चाहता, पर ये कार्य आपको करना तो है। उनके मन पर कार्य करके बदलना है उनके मनों को, उनकी वृत्तियों को,

उनके दिलों को, उनके चिंतन को, उनके अंतस को कुछ इस तरह परिवर्तन करना है, कि जो न चाहते हुए भी उनके मानस पटल पर ये विचार तूफान बनकर कौंधता रहे और तब तक चैन न लेने दे जब तक कि पूर्ण परिवर्तन न हो जाए, और तुम्हारी ये नेक भावना कि वे अब और पापों का बोझा न बढ़ा, जहन्नुम की भोगना से अपने को कुछ तो बचायें और इंसानियत से ऊपर उठकर देवत्व को प्राप्त कराने की पढ़ाई जो भगवान पढ़ाने आये हैं वो अगर न भी पढ़ पायें, तो भी बच्चे होने का कुछ तो अनुभव उनको भी मिल जाये। ये शुद्ध भावना रक्त बनकर तुम्हारी धमनियों में बहने लगे और तुम्हारा ये शुद्ध भाव तुम्हारे हृदय का स्पन्दन बन जाये, यह विचार तुम्हें सोने न दे, यह संकल्प तुम्हारे पुरुषार्थ का पर्याय बन जाये। मेरे भाई! ये कार्य तुम्हें सकाश से ही करना होगा, इसलिए तैयार करो अपने मन को, रिफाइन करो अपनी पवित्रता को, तेज़ करो अपनी चेतना को, प्रखर करो योग की ज्वाला को। हे त्रिलोकी, हे त्रिनेत्री, हे त्रिभुवन के आली औलाद, तुम क्या नहीं कर सकते! जबकि सर्वशक्तिवान भाग्यविधाता साथ तुम्हारे, इसलिए उठो, आगे बढ़ो, कुछ कर दिखाओ। ●

राँची-हरमू रोड(झारखण्ड)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चांदमल जैन स्कूल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए राज्यपाल द्रौपदी मुरमू। साथ हैं ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

गुमला-झारखण्ड। केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री सुदर्शन भगत को ज्ञानचर्चा के पश्चात् प्रसाद एवं ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.क्र. शान्ति।

फरीदाबाद। हरियाणा के पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर महेन्द्र प्रताप सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उनके साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. शम्भूनाथ,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. कौशल्या।

हाथरस-उ.प्र.। "व्यसन मुक्ति शिविर" का अवलोकन करने के पश्चात् पूर्व केन्द्रीय मंत्री अनिल शास्त्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ता। साथ हैं ब्र.कु. नीतू, कांग्रेस शहराध्यक्ष चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य तथा कांग्रेस के अन्य वरिष्ठ नेतागण।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन तथा ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "ऑरगन्स एंड बॉडी डोनेशन' कार्यक्रम तथा ब्र.कु. शिवानी द्वारा 'डेस्टिनी बाई च्वाइस और चांस विषय पर लेक्चर" के पश्चात् ब्र.कु. शिवानी को सम्मानित करते हुए आइ.एम.ए और डी.एम.ए के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. अनिल गोयल, डॉ. पीयूष जैन, डॉ.सुनील सिंघल, डॉ.विनय अग्रवाल, डॉ. अश्विनी गोयल, डॉ. राकेश गुप्ता व अन्य।

भुवनेश्वर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में सत्यानंद नायक,चीफ जनरल मैनेजर,बी.एस.एन.एल., उनके सीनियर प्राइवेट सेक्रेट्री अगाधु चरण बेहरा, ब्र.कु. इंदुमति, ब्र.कु. बिजय तथा अन्य।